HIN3B18a_cours-05-2013-02-28

कृष्णा सोबती (18/2/1925, गुजरात, अब पाकिस्तान में)
मातृभाषा पंजाबी, लेखन हिन्दी में, हिन्दी अध्यापन
साहित्य अकादमी पुरस्कार (1980)

कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने हिंदी की कथा भाषा को अद्‌भुत ताज़गी़ दी है। उनके भाषा संस्कार के घनत्व, जीवंत प्रांजलता और संप्रेषण ने हमारे वक़्त के कई पेचीदा सत्य उजागर किए हैं।

उपन्यास **सूरजमुखी अँधेरे के** (1972) में नारी जीवन की मनोवैज्ञानिक समस्या को उभार गया है। बलात्कार का शिकार होने से 'रत्ती' असहिष्णु, क्रूर और फ्रिज़िड हो जाती। लेकिन दिवाकर के सम्पर्क में आने पर उसे फिर से नया जीवन मिल जाता है। इस प्रकार उसे कामविकृति से मुक्ति मिल जाती है। **जिन्दगीनामा** (1979) – में पंजाब की जिंदगी का ब्यौरा दिया गया है। पंजाब की संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाजों, दन्तकथाओं तथा प्रचलित लोकोक्तियों का रोचक वर्णन प्रस्तुत किया है। उपन्यास की कमज़ोरी यह है कि इसकी कथा बिखरी हुई है। **दिलो-दानिश** (1993) – एक अमीर वकील की दुहरी ज़िन्दगी की कहानी है। समृद्ध परिवार के एक हिन्दू वकील 'कृपानारायण' शादीशुदा होने पर भी अपनी मुस्लिम मुवक्किल 'नमीस बानो' की बेटी 'महकबानो' पर फिदा हो जाते हैं। वे 'महकबानो' को एक अलग घर में रखते हैं। उनके गुप्त रिश्ते से एक बेटे 'बदरुद्दीन' और एक बेटी 'मासूमा' का जन्म होता है। जब 'मासूमा' की शादी का वक्त आता है तो उसे अपने घर लाकर शादी करना चाहते हैं। इस पर 'महकबानो' नाराज होकर अलग हो जाती है। लेकिन बेटी की शादी के दिन 'कृपानारायण' की इच्छा के खिलाफ 'मासूमा' की माँ के रूप में भाग लेती हैं। अंतिम दृश्य में 'कृपानारायण' मरने वाले हैं तो 'महकबानो' उसके सामने से गुजरती है। 'महकबानो' की आँखों में आँसू हैं। यही कुल-मिलाकर इस उपन्यास में नारी-जीवन की व्यथा की कहानी है। **समय सरगम** (2000) – यह उपन्यास एक अविवाहित बूढ़ी महिला तथा एक बूढ़े विधुर की जीवन को जीने, पहचानने और स्वीकारने की कहानी है। इस उपन्यास के अनुसार उदात्त, अनुदात्त और त्वरित रागों को बनाए रखना ही जीवन है। आलोचकों ने कहा है कि '**बादलों के घेरे**', '**डार से बिछुड़ी**', '**तीन पहाड़**' एवं '**मित्रो मरजानी**' कहानी संग्रहों में कृष्णा सोबती ने नारी की अश्लीलता को उजागर किया है। लेकिन लेखिका ने इसे ऐसे उभारा है कि साधारण पाठक हतप्रभ तक हो सकता है।

विवाद

इनकी कहानियों को लेकर काफ़ी विवाद हुआ। विवाद का कारण इनकी मांसलता है। स्त्री होकर ऐसा साहसी लेखन करना सभी लेखिकाओं के लिए सम्भव नहीं है। उनके 'ज़िन्दगीनामा' जैसे उपन्यास और 'मित्रो मरजानी' जैसे कहानी संग्रहों में मांसलता को भारी उभार दिया गया है। कृष्णा सोबती की जीवनगत यौनकुंठा उनके पात्रों पर छाई रहती है।